भारतेंदु युगीन साहित्यिक पत्रकारिता की मूल संवेदना

स्नातक-हिन्दी(अंतिम सत्र) के विद्यार्थियों हेतु
पाठ्यक्रम कोड-3014

अंजनी कुमार श्रीवास्तव
सह आचार्य, हिन्दी विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय
विश्वविद्यालय,
बिहार (मोतिहारी)

* 19 वीं शती को हिन्दी आन्दोलन, राष्ट्रीय आन्दोलन, नवजागरण, आधुनिकता और ज्ञानोदय आदि से अभिहित किया गया है|
  * विविध विद्वानों ने 19 वीं शती अथवा भारतेंदु युग की मूल संवेदना पर विचार किया है|
  * रामविलास शर्मा ने 1857 के स्वाधीनता संग्राम को हिन्दी नवजागरण का प्रथम चरण मानते हुए भारतेंदु युग को उसका दूसरा चरण माना है| उनके अनुसार हिन्दी नवजागरण के केंद्र में साम्राज्यवाद विरोध है |
- नामवर सिंह और पुरुषोत्तम अग्रवाल ने 1857 और भारतेंदु युग की संवेदना में अंतर किया है|
- वीरभारत तलवार ने भारतेंदु युग की मूल संवेदना को हिन्दू राष्ट्रवाद –---हिन्दी, नागरी और गाय के रूप में देखा है|
- आलोक राय के अनुसार यह हिन्दी राष्ट्रवाद/ साम्राज्यवाद था जिसने कैथी और महाजनी लिपियों को समाप्त कर दिया|

- भारतेंदु युगीन साहित्यिक पत्रकारिता के सम्बन्ध में साम्राज्यवाद विरोध; हिन्दी, नागरी, गाय तथा हिन्दी राष्ट्रवाद जैसी धारणाएँ एकांगी हैं | ये भारतेंदु युग अथवा उस युग की पत्रकारिता की मूल संवेदना को अभिव्यक्त करने में समर्थ नहीं हैं |

* भारतेंदु युग की पत्रकारिता की मूल संवेदना है –स्वत्व
  भारतेंदु ने इसका उद्घोष भी किया –
  "स्वत्व निज भारत गहै"

- वीर भारत तलवार के अनुसार यह स्वत्व नहीं सत्त्व है| किन्तु,सत्त्व और स्वत्व दोनों इस सन्दर्भ में एक ही हैं |
- बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन'–

नहिं भारत वह रह्यो नाहिं या मैं वह तत्त्व
हाय विधाता ने हरयो कैसे याको सत्त्व

स्वत्व के विविध आयाम

- स्वत्व के पाँच आयाम हैं | इन्हीं आयामों में से किसी एक को केंद्र में लेकर विविध विद्वानों ने अपनी स्थापना दी है|

1. स्वधर्म—हिन्दू नवजागरण/ हिन्दू राष्ट्रवाद-तलवार
2. स्वभाषा- हिन्दी राष्ट्रवाद—आलोक राय
3. स्वराज – साम्राज्यवाद विरोध – रामविलास शर्मा
4. स्वदेशी – आर्थिक राष्ट्रवाद – बिपनचन्द्र*
5. स्वाभिमान–पुनरुत्थान या अभिज्ञान–नामवर सिंह

*बिपनचंद्र का सन्दर्भ राजनीतिक है|

1. स्वधर्म

- स्वधर्म की चिंता भारतेंदु मंडल के सभी पत्रकारों में मौजूद है:

धनि धनि भारत आरत के तुम एकमात्र हितकारी |
सहि न सके स्वधर्म निंदा बस घोर विपत्ति सर भारी ||
(सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के बारे में प्रतापनारायण मिश्र)

- इस स्वधर्म का फलक व्यापक है| यह जातिगत धर्म, राष्ट्र धर्म और हिन्दू धर्म- तीनों को अपने भीतर समेट लेता है| जातिगत संगठनों के बावजूद जातिगत वैरभाव नहीं है |
- राष्ट्र धर्म के साथ ही हिन्दू समाज का जागरण, धर्म सुधार, धर्मांतरण की चिंता, धर्म रक्षा की भावना तथा धर्म रक्षकों के प्रति सम्मान – ये सभी इस युग की साहित्यिक पत्रकारिता में मिलते हैं |

उदाहरणार्थ :

* 1882 में बालकृष्ण भट्ट द्वारा हिन्दू समाज का घोषणा पत्र प्रकाशित

* प्रतापनारायण मिश्र का लेख- 'भारतीय प्रजा में दो दल' में धर्मांतरण का विरोध और धर्म में वापसी का समर्थन| साथ ही हिन्दू-मुस्लिम एकता की बात |

* भारतेंदु के निधन पर प्रेमघन की कविता-

हा आरत भारत को तू एक आधार
हा हिन्दू धर्मेतरण को तू काल कराल
हा गोवध के बंद हित उद्यम करन अपार

* 'आनंद कादम्बिनी' में प्रेमघन का अकबर की वीर पूजा के 'इंडियन पीपल' के प्रस्ताव के स्थान पर महाराणा प्रताप की वीर पूजा के पक्ष में समर्थन

2. स्वभाषा

- स्वभाषा की चिंता भारतेंदु युग की पत्रकारिता की मूल चिंताओं में एक है| भारतेंदु ने "निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल" कहा |
- 1836 में हिन्दी बोली में अदालतों में काम किए जाने का इश्तिहार निकला, किन्तु मुसलमानों के विरोध के कारण 1837 में उर्दू सभी दफ्तरों की भाषा बन गयी|
- 1867 में पश्चिमोत्तर प्रांत की भाषा में विश्वविद्यालय का प्रस्ताव- 1868 में शिवप्रसाद सितारेहिंद ने नागरी लिपि की वकालत की |
- 1870 के पत्र द्वारा सर सैयद अहमद खान का शिवप्रसाद सितारेहिंद का विरोध तथा सांप्रदायिक ध्रुवीकरण – "...आम हिन्दी लोगों के दिल में जोश आया है जबान उर्दू व् फारसी लिपि को जो मुसलामानों की निशानी है मिटा दिया जाएगा| यह एक ऐसा उपाय है कि हिन्दू-मुसलमान में किसी तरह एकता नहीं रह सकती| मैं समझता हूँ कि अगर मुसलमान हिन्दू से अलग होकर अपना कारोबार शुरू करे तो मुसलमानों को ज्यादा फ़ायदा होगा और हिन्दू नुकसान में रहेंगे |"

हिन्दी-उर्दू विवाद

- सर सैयद अहमद खान के रवैये से हिन्दी-उर्दू विवाद प्रारम्भ हुआ |
- भारतेंदु युगीन पत्रकारों-लेखकों-बुद्धिजीवियों ने हिन्दी के पक्ष में आवाज उठाई |
- उर्दू को बाजारू और वेश्याओं की भाषा कहा जाने लगा|
- नागरी विवाद, भाषा विवाद बना, फिर साम्प्रदायिक विवाद बन गया | भारतेंदु मंडल तथा बाहर भी हिन्दी के पक्ष में तथा उर्दू के विरोध में लेख लिखे जाने लगे| मुसलमान उर्दू की वकालत कर रहे थे और हिन्दू हिन्दी की|
- हिन्दी चूँकि चेतना और भाषा दोनों के स्तर पर मराठी, बंगला आदि से संवाद कर रही थी ऐसे में उर्दू इस समन्वित चेतना की भाषा नहीं हो सकती थी|

3.स्वराज

- भारतेंदु युगीन पत्रकारिता में राजभक्ति भी है और देशभक्ति भी| राजभक्ति भी स्वराज की आकांक्षा से ही है| बादशाह दर्पण- जो कछु ही मुसलामानों की भाँति इन्होंने हमारी आँखों के सामने देवमूर्तियाँ नहीं तोड़ी और स्त्रियों को बलात्कार से छीन नहीं लिया| न घास की भांति सर काटे गए न मुँह में जबरदस्ती थूक मुसलमान किये गये|
- हिन्दू स्वराज की आकांक्षा भी दिखती है:

  भारत हिन्दुओं का स्थान है और हिन्दुओं की उन्नति अवनति से ही भारत है|-- प्रतापनारायण मिश्र

* भारतेंदु युग की पत्रकारिता में अंग्रेजी राज़ की आलोचना का स्वर भी अत्यंत प्रखर है- अंगरेज राज सुख साज .....

4. स्वदेशी

- भारतेंदु युग में स्वदेशी आर्थिक के साथ ही सांस्कृतिक अवधारणा भी है |
- 1874 में 'कविवचन सुधा' में भारतेंदु ने लिखा - हमलोग आज के दिन से कोई विलायती कपड़ा नहीं पहनेंगे |
- आनंद कादम्बिनी – स्वदेशी वस्तु स्वीकार, विदेशी बहिष्कार
- बालकृष्ण भट्ट- नाम भी स्वदेशी होना चाहिए| कायस्थों के नाम यवन संपर्क से दूषित हैं|
- स्वदेशी को सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में देखा गया| कजली और बुढवा मंगल की प्रेमघन की व्याख्या से यह स्पष्ट है |

5. स्वाभिमान

- स्वाभिमान के लिए गौरवमयी अतीत का स्मरण आवश्यक है| इसे ही पुनरुत्थानवादी चेतना भी कहा गया है| यह बोध इस युग की पत्रकारिता में उपस्थित है|
- प्रतापनारायण मिश्र ने ‘ पुराण समझने को समझ चाहिए’ जैसे लेख लिख अंग्रेजों की दृष्टि की आलोचना की |
- नामवर सिंह ने इस युग पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि जैसे दुष्यंत शकुन्तला का अभिज्ञान करता है जिसे वह भूल गया था वैसे ही भारत अतीत का अभिज्ञान करता है| लेकिन, भारत भूले हुए को याद नहीं कर रहा था बल्कि व्याख्या वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में कर रहा था| पाश्चात्य चिंतन के समानांतर स्वत्व संघर्ष में उसकी भूमिका सामने आ रही थी|

स्वत्व प्राप्ति\ग्रहण की प्रविधि

- स्वत्व की प्राप्ति के लिए भारतेंदु युगीन मनीषा 'प्राचीन और नवीन की विचारपूर्वक मीमांसा' करती है- 'सारसुधानिधि' निकालने के सम्बन्ध में संपादक का उद्देश्य|
  यही प्राविधि है इस युग की |

- यही मीमांसा सुधारवाद की और ले जाती है--स्त्री-शिक्षा, विधवा विवाह, बाल विवाह विरोध आदि|

- बार-बार भारतीय सन्दर्भ की खोज इसी का परिणाम है| इसलिए यहाँ भारतीय ज्ञानमीमांसा का निषेध नहीं है न ही किसी प्रकार का सांस्कृतिक विच्छेद है |

उपसंहार

- प्राचीन और नवीन की विचारपूर्वक मीमांसा की यह प्रविधि अंग्रेजीयत, ईसाइयत और आधुनिक संस्थाएँ सबका प्रत्याख्यान करती हैं | 'अंधेर नगरी' नाटक इस प्रत्याख्यान का रूपक है| गाँधी के हिन्द स्वराज की पृष्ठभूमि जिसे आधुनिकता का क्रिटिक कहते हैं यहाँ मिल जाएगी |
- इसलिए भारतेन्दु युगीन हिन्दी पत्रकारिता को प्रत्याख्यान के रूप में पढ़ा जाना चाहिए| स्वत्व इसका साधक और केंद्र-बिंदु दोनों है |

धन्यवाद !